राष्ट्रीय शक्ति की अवधारणा, उद्देश्य एवं तत्व एवं प्रासंगिकता — (संजय सिंह)

आर्गेन्स्की — "अपने हितो के अनुकूल दूसरे राष्ट्रों के व्यवहार को प्रभावित करने की योग्यता का नाम शक्ति है। जब कोई राष्ट्र ऐसा नही कर सकता, वह विशाल हो सकता है, धनवान हो सकता है, और महान भी हो सकता है, किन्तु शक्तिशाली नहीं कहा जायेगा।"

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था मे ईकाइयाँ (राज्य) अन्त: क्रियाशील है अत: अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था आज अराजकता की स्थिति से गुजर रहे है। अर्थात नियंत्रण करने वाली शक्ति का अभाव है यहाँ सभी ईकाइयो के अपने-2 हित है और अपने-अपने हितो को शक्तिशाली बनाने हेतु सभी शक्ति चाहते है।

शक्ति से तात्पर्य - दूसरो को प्रभावित कर सकने की क्षमता को साधारतया हम शक्ति के नाम से सम्बोधित करते है।

मार्गेन्थो के अनुसार - अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अन्य राजनीति की तरह शक्ति के लिए संघर्ष है।"

उपरोक्त परिभाषाओ से शक्ति के दो आयाम परिलक्षित होते है प्रथम, आन्तरिक आयाम इससे तात्पर्य स्वंतत्रता से है अर्थात किसी भी राष्ट्र पर वाह्य प्रभावो का अभाव। जबकि द्वितीय - वाह्य आयाम - मे किसी भी राष्ट्र का क्षमतावान तथा योग्यतावान होना आवश्यक है।

शक्ति की विशेषताएं - सामान्यत: राष्ट्रीय शक्ति की चार विशेषताएं उभरकर सामने आती है

1. शक्ति एक सापेक्षिक सम्प्रत्यय है अर्थात एक राष्ट्र की दूसरे राष्ट्र से तुलना करने पर ही शक्ति की वास्तविक स्थिति का पता लगाया जा सकता है।
2. राष्ट्रीय शक्ति के विभिन्न तत्व होते है जैसे- भौगोलिक, मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधन सरकार का शासन, विचारधारा, राष्ट्र का चरित्र एवं मनोबल, जनसंख्या, तकनीकी, नेतृत्व
3. राष्ट्रीय शक्ति के लिए इन तत्वों की मात्र उपस्थिति नही बल्कि इनका प्रयोग आवश्यक है
4. शक्ति साध्य तथा साधन दोनो है अर्थात किसी उद्देश्य का प्राप्त करने का निर्धारित साध्य है जबकि जिनसे प्राप्त करना है वह साधन है।

~~अकि~~ राष्ट्रीय शक्ति के उद्देश्य -

1. राष्ट्रहित को अधिक से अधिक बढ़ाना या प्राप्त करना।
2. सौदेबाजी की क्षमता बढ़ाना जैसकि 9/11/2001 की (वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पेंटागन) घटना के बाद भी पाकिस्तान ने अमेरिका से बहुत लाभ प्राप्त किया है जबकि आतंकवाद के कारण ही सबकुछ घटित हुआ तदोपरान्त अपनी कुशल सौदेबाजी की क्षमता से पाकिस्तान अपने ~~मंसू~~ मंसूबो को मे कामयाब रहा।
3. विश्व व्यवस्था को अपने अनुरुप ढालना - जिस प्रकार अमेरिका ने WTO, विश्वबैंक IMF पर अपना वर्चस्व बनाये हुए है जिसे वाशिंगटन सहमति भी कहा जाता है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय जनमत को अपने पक्ष मे करना - जैसाकि भारत सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए प्रयास कर रहा है।

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय शक्ति के तत्व - ① भौगोलिक तत्व - आकार, स्थलाकृति (पर्वत, नदी, पठार), अवस्थिति, जलवायु

राष्ट्रीय शक्ति के तत्वों मे प्रथम स्थान भौगोलिक तत्व का है जिसमे ~~आकार~~ देश का आकार शक्ति को बनाये रखने मे महत्वपूर्ण योगदान करता है जैसे रूस के बड़े आकार के कारण 1937, व 1945 मे द्वितीय विश्व युद्ध के समय जर्मनी उसे हरा नही सका। लेकिन यह जरूरी नही कि ~~as~~ जैसाकि 1905 मे रूस को जापान ने हरा दिया। नेपोलियन - "किसी देश का जीतना/हारना उसकी भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है।

→ भारत के उत्तरी भाग मे हिमालय का होना सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ब्रिटेन के चारो ओर समुद्री सीमा होने से वह सैनिक रूप से शक्तिशाली है।

→ भारत की अवस्थिति के कारण ही पड़ोसी देशो से सदैव विवाद की स्थिति बनी रहती है जबकि अमेरिका ~~e~~ अटलांटिक व प्रशान्त महासागर से घिरे होने पर आर्थिक व सामरिक दृष्टिकोण से सम्पन्न है।

→ यूरोप की ठण्डी जलवायु विकास मे सहायक है जबकि भारत की गर्म जलवायु आलसीपन का प्रतीक है किन्तु रूस का दक्षिणी भाग सदैव बर्फ से ढका रहता है यह भी राष्ट्रीय शक्ति के लिए आवश्यक नही।

अतः ~~परन्तु~~ भौगोलिक कारक राष्ट्रीय शक्ति को सुदृढ़ करने मे आवश्यक जरूर है लेकिन अन्तिम निर्धारक नही, तकनीकी विकास ने इसको कम कर दिया है।

② मानवीय व प्राकृतिक संसाधन - किसी भी देश के शिक्षित, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ~~अपने~~ उस देश की राष्ट्रीय शक्ति को बढ़ाने मे सहयोग प्रदान करते है जैसाकि जापान मे हड़ताल के समय काम के घण्टे मे बढ़ोत्तरी होती है जबकि भारत जैसे देश मे काम को रोककर हड़ताल की जाती है अतः जापान का समृद्ध होना स्वाभाविक है।

प्राकृतिक संसाधन पेट्रोल, खनिज, कोयला, यूरेनियम, थोरियम आदि राष्ट्रीय शक्ति को सुदृढ़ बनाते है लेकिन उनका उचित दोहन कर लेने पर जैसाकि अमेरिका ने किया है जबकि ~~दक्षिण~~ पश्चिम एशिया के देशो मे प्राकृतिक संसाधनो की प्रचुरता है पर वह विकसित न हो सके। कभी-कभी अधिक प्राकृतिक संसाधन खतरे का कारण भी बन जाता है जैसे इराक, पर अमेरिकी आक्रमण तथा सद्दाम की तुरैत पर हमला और जीवन की समाप्ति आदि)

③ सरकार का शासन - राज्य अमूर्त होता है जबकि सरकार मूर्त होती है इसमे सरकार के स्वरूप, उद्देश्य, विदेश नीति के प्रति रुचि तथा ~~यह~~ देखते है कि वह अपने हितो को कहाँ तक बढ़ाती है यदि सरकार विदेश नीति अथवा राष्ट्रहित के प्रति वचनबद्ध है तो उससे कोई फर्क नही पड़ता कि सरकार का स्वरूप तानाशाही, सर्वाधिकारवादी या लोकतान्त्रिक है जैसाकि चीन (1949) को भारत (1947) मे स्वतंत्र हुए पर आज कि चीन की सरकार की कुशलता ने उसे विकसित राष्ट्र

Scanned with CamScanner

के क्षेत्रो मे ८ शुभार कर दिया है जबकि भारत आज भी विकासशील देश है और विकास के पथ पर अग्रसर है।

कभी-२ सरकार की अकुशलता उस देश को संकट मे डाल देती है जैसाकि ईराक द्वारा कुवैत पर हमला करना और इसी कारण आज ईराक की वर्तमान स्थिति किसी से छुपी नही है जबकि सोवियत संघ 1990 के विघटन के बाद मात्र 18 वर्षो मे कितनी सफलता प्राप्त कर चुका है।

(4) अर्थव्यवस्था- किसी भी देश की सुदृढ आर्थिक व्यवस्था उस देश की रीढ होती है। अतः इसके लिए प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक तीनो क्षेत्रो मे सन्तुलन होना चाहिए जबकि न्यूजीलैंड व आस्ट्रेलिया कृषि पर आश्रित है फिर भी सफलता प्राप्त कर चुके है और भारत ~~प्राथमिक क्षेत्र~~ अभी भी असन्तुलन मे है आर्थिक सुदृढता ही सैनिक सुदृढता को बढाती है भारत की असन्तुलित अर्थव्यवस्था —

	कार्यरत जनसंख्या	G.D.P. मे योगदान
कृषि	60%	18.5%
उद्योग	25%	26.5%
सेवा	15%	55%

(5) विदेशी स्रोतो पर निर्भरता- जो देश विदेशी आयात, कच्चे माल, तकनीकी सामरिक, आर्थिक आदि क्षेत्रो मे अधिक निर्भर होगा उसकी राष्ट्रीय शक्ति उतनी ही क्षीण होगी।

(6) वैज्ञानिक व तकनीकी क्षमता- आधुनिक युग मे वैज्ञानिक व तकनीकी क्षमता से आर्थिक विकास को प्रोत्साहन व सुदृढता मिलती है, यह लोगो के जीवनस्तर को उठाता है, आधारिक संरचना का विकास जिससे आर्थिक व सामाजिक दोनो क्षेत्रो को आगे बढाता है सैन्यीकरण व शस्त्रीकरण को मजबूत करता है जैसे- इजरायल U.S.A. जापान- 1945 परमाणु विस्फोट के बाद भी इलेक्ट्रानिक व कार मोबाइल तथा भारत सूचना प्रौद्योगिकी के आधार पर शक्तिशाली बने है।

(7) राष्ट्रीय चरित्र या मनोबल- देश के लिए राष्ट्र व्यक्तियो का चरित्र व मनोबल बहुत आवश्यक है क्योंकि इसी से एकता की व राष्ट्रवाद की भावना का विकास होता है जबकि चरित्रहीनता अलगाववाद को जन्म देती है जो किसी भी देश के लिए घातक है जैसाकि जापान मे हड़ताल के समय कार्य के घण्टे बढ़ जाते है जबकि भारत मे कम हो जाते है।

(8) विचारधारा- विचारधारा अच्छी होने से देश की आन्तरिक समस्या कैसे मुक्ति पाती है ~~लेकिन~~ जबकि बाहरी क्षेत्र मे राष्ट्रीय हित को उचित ठहराती है जैसाकि अमेरिका लोकतन्त्रवाद व मानवाधिकार की विचारधारा से

Scanned with CamScanner

अपने एक इतर राज्य को कायम करता जा रहा है और भारत अपनी गुटनिरपेक्षता व पंचशील के माध्यम से विश्व मे पहचाना जाता है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे विचारधारा का महत्वपूर्ण स्थान है।

अन्ततः निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शक्ति के तत्व आवश्यक है लेकिन अन्तिम निर्धारक नही इसके अलावा अन्य तत्व भी आवश्यक है। अपितु विभिन्न तत्वो का अन्तर्सम्बन्ध ही शक्ति का निर्धारणकारी है इसके साथ ही शक्ति एक गतिशील संकल्पना है जिसकी परिस्थितियाँ बदलती रहती है अतः प्रत्येक राष्ट्र को भी ~~भार~~ स्थिति के अनुसार अपने को ढालना चाहिए क्योंकि आज जो शक्तिशाली है, वह कल कमजोर भी हो सकता है जैसा कि ईराक मे सद्दाम हुसैन का शासनकाल।

शक्ति का मूल्यांकन करना आसान नही जैसाकि अमेरिका व रूस जैसे शक्तिशाली देशो को वियतनाम व अफगानिस्तान से मुँह की खानी पड़ी यथार्थवादी शक्ति को "सापेक्षिक संकल्पना" मानते है क्योंकि उनका कहना है अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति शक्ति संघर्ष की राजनीति है। ~~जबकि~~

जबकि दूसरी ओर नव यथार्थवादी जिनमे केनेथ वाल्ट्ज प्रमुख है शक्ति को 'संरचनात्मक' मानते हैं। इनका मानना है कि ~~आधि~~ विश्व व्यवस्था बहुत जटिल है क्योंकि इनमें अन्तःक्रियाशीलता केवल राज्यो के बीच मे नही बल्कि अन्य समुदायो (IMF, विश्व बैंक, आदि) जैसे गैर-राज्य आदि के साथ भी है।

केनेथ वाल्ट्ज ने 4 प्रकार के संरचना की चर्चा की है:-

1. ज्ञान की संरचना- मीडिया पर जिसका वर्चस्व हो।
2. वित्तीय संरचना- जिसका वैश्विक संगठन से अच्छा सम्बन्ध हो।
3. सुरक्षा संरचना- आतंकवाद, पर्यावरण आदि से सुरक्षा
4. उत्पादन की संरचना- राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को छोड़ विश्व बहुउद्देशीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। आऊट सोर्सिंग को उदाहरण के रूप मे लिया जा सकता है।

अतः राष्ट्रीय शक्ति को भारतीय परिपेक्ष्य मे कहा जा सकता है कि भारत ने इसमे अपनी विदेश नीति, आर्थिक संरचना, भौगोलिक स्थिति, राष्ट्रीय चरित्र, आदि के माध्यम से प्राप्त करने मे सफलता हासिल की है। तथा धीरे-धीरे अपने लक्ष्य 2020 की ओर अग्रसर है इसके लिए अभी और दृढ़ता की आवश्यकता है चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र मे हो जैसा कि लोकतन्त्र के आधार को बनाये रखते

बनाये रखते हुए आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना, जैसे प्रति व्यक्ति मे वृद्धि, भुगतान सन्तुलन बनाये रखना, निर्यात को बढ़ावा देना तथा आयात की निर्भरता को कम करना, खनिज पदार्थों का उचित दोहन करना इसके लिए जरुरी है आधारिक संरचनाओं विकास करना, निवेश को प्रोत्साहन जिससे अधिक से अधिक विदेशी पूँजी का प्राप्ति हो सके।

सामाजिक एवं आन्तरिक क्षेत्र मे भी शिक्षा स्वास्थ्य जागरूकता के माध्यम व्यक्तियों की एकता बनाये रखने की आवश्यकता है जैसाकि आज भारत में कहीं- जातिवाद, साम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद, भाषावाद जैसी समस्याओं ने पँगु बना रखा है उसके के साथ नक्सलवाद, LITTE, उल्फा, बोडो, आदि जैसी हिंसात्मक गतिविधियों ने देश की आन्तरिक व्यवस्था को अराजक बना रखा है अतः सरकार व जनसहयोग दोनो के सह-अस्तित्व इन समस्याओं का समाधान करना चाहिए नौकरशाही वर्ग के लोगो मे भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, अकर्मण्यता इन सभी को समाप्त करने हेतु सरकार को समय-समय पर औचक निरीक्षण कर शासन व्यवस्था को स्वस्थ बनाना चाहिए।

राजनैतिक दलो व राजनीतिज्ञों को भी अपने कर्तव्य का भान होना चाहिए वे ही देश के प्रहरी है राजनीति मे अपराधीकरण नही होना चाहिए, सरकार को अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तब चाहे वह आन्तरिक समस्या हो या अन्तर्राष्ट्रीय मामले, सभी राजनैतिक दलो को प्रजातन्त्र की आत्मा को बनाये रखते हुए देश की समृद्धि एकता अखण्डता को अक्षुण्णा बनाये रखने मे अपना सहयोग देना होगा तभी हम एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण कर सकेगे और अपनी राष्ट्रीय शक्ति को मजबूती प्रदान कर अपनी विदेश नीति के सफलता का परचम लगायेगे।

हमे देश की खनिज सम्पदा के दोहन के साथ ही पारिस्थितिकीय सन्तुलन को भी बनाये रखना होगा क्योंकि

Scanned with CamScanner

अपने एक छत्र राज्य को कायम करता था रहा है और भारत अपनी गुटनिरपेक्षता व पंचशील के माध्यम से विश्व मे पहचाना जाता है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे विचारधारा का महत्वपूर्ण स्थान है।

अन्ततः निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शक्ति के तत्व आवश्यक है लेकिन अन्तिम निर्धारक नही इसके अलावा अन्य तत्व भी आवश्यक है। अपितु विभिन्न तत्वो का अन्तर्सम्बन्ध ही शक्ति का निर्धारित करती है इसके साथ ही शक्ति एक गतिशील संकल्पना है जिसकी परिस्थितियाँ बदलती रहती है अतः प्रत्येक राष्ट्र को भी ~~भार~~ स्थिति के अनुसार अपने को ढालना चाहिए। क्योंकि आज जो शक्तिशाली है, वह कल कमजोर भी हो सकता है जैसा कि ईराक मे सद्दाम हुसैन का शासनकाल।

शक्ति का मूल्यांकन करना आसान नही जैसाकि अमेरिका व रूस जैसे शक्तिशाली देशो को वियतनाम व अफगानिस्तान से मुँह की खानी पड़ी यथार्थवादी शक्ति को "सापेक्षिक संकल्पना" मानते है क्योंकि इनका कहना है अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति शक्ति संघर्ष की राजनीति है। ~~जबकि~~

जबकि दूसरी ओर नव यथार्थवादी जिनमे केनेथ वाल्ट्ज प्रमुख है शक्ति को 'संरचनात्मक' मानते है। इनका मानना है कि ~~आर्थिक~~ व्यवस्था बहुत जटिल है क्योंकि इनमें अन्तः क्रियाशीलता केवल राज्यो के बीच मे नही बल्कि अन्य समुदायो (IMF, विश्व बैंक, आदि) जैसे गैर-राज्य आदि के साथ भी है।

केनेथ वाल्ट्ज ने 4 प्रकार के संरचना की चर्चा की है :-

1. ज्ञान की संरचना - मीडिया पर जिसका वर्चस्व हो ।
2. वित्तीय संरचना - जिसका वैश्विक संगठन से अच्छा सम्बन्ध हो।
3. सुरक्षा संरचना - आतंकवाद, पर्यावरण आदि से सुरक्षा
4. उत्पादन की संरचना - राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को छोड़ विश्व बहुदेशीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। आकर सोसिया को उदाहरण के रूप मे किया जा सकता है।

अतः राष्ट्रीय शक्ति को भारतीय परिपेक्ष्य मे कहा जा सकता है कि भारत ने इसमे अपनी विदेश नीति, आर्थिक संरचना, भौगोलिक स्थिति, राष्ट्रीय चरित्र, आदि के माध्यम से प्राप्त करने मे सफलता हासिल की है। तथा धीरे-धीरे अपने लक्ष्य 2020 की ओर अग्रसर है इसके लिए अभी और सुदृढ़ता की आवश्यकता है चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र मे हो जैसा कि लोकतन्त्र के आधार को बनाये रखते

बनाये रखते हुए आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना, जैसे प्रति व्यक्ति मे व्यक्ति, भुगतान सन्तुलन बनाये रखना, ~~आयात~~ निर्यात को बढ़ावा देना तथा ~~निर्यात~~ आयात की निर्भरता को कम करना, खनिज पदार्थों का उचित दोहन करना उसके लिए जरूरी है आधारिक संरचनाओं विकास करना, निवेश को प्रोत्साहन जिससे अधिक से अधिक विदेशी पूंजी का प्राप्ति हो सके।

सामाजिक एवं आन्तरिक क्षेत्र मे भी शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता के माध्यम व्यक्तियों की एकता बनाये रखने की आवश्यकता है जैसाकि आज भारत में कही- ~~क्षेत्रवाद~~ जातिवाद, साम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद, भाषावाद जैसी समस्याओ ने पंगु बना रखा है उसके के साथ नक्सलवाद, LITTE, उल्फा, बोडो, आदि जैसी ~~आन्त~~ हिंसात्मक गतिविधियों ने देश की आन्तरिक व्यवस्था को अराजक बना रखा है अतः सरकार को क जनसहयोग दोनो के ~~सहअस्तित्व~~ सह-अस्तित्व इन समस्याओ का समाधान करना चाहिए नौकरशाही वर्ग के लोगो क मे भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, ~~अकर्मण्यता~~ इन सभी को समाप्त करने हेतु सरकार को समय-समय पर औचक निरीक्षण कर शासन व्यवस्था को स्वस्थ बनाना चाहिए।

राजनैतिक दलो व राजनीतिज्ञो को भी अपने कर्तव्य का भान होना चाहिए वे ही देश के प्रहरी है राजनीति मे अपराधीकरण नही होना चाहिए, सरकार को अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तब चाहे वह आन्तरिक समस्या हो या अन्तर्राष्ट्रीय मामले, सभी राजनैतिक दलो को प्रजातन्त्र की आत्मा को बनाये रखते हुए देश की समृद्धि एकता अखण्डता ~~बना~~ को ~~अक्षुण्ण~~ अक्षुण्ण बनाये रखने मे अपना सहयोग देना होगा ~~तभी~~ हम एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण कर सकेगे और अपनी राष्ट्रीय शक्ति को मजबूती प्रदान कर अपनी विदेश नीति के सफलता का परचम लगायेगे।

Scanned with CamScanner